# बाइबल टीचर

वर्ष 18 अक्टूबर 2021 अंक 11

# सम्पादकीय

## क्या आप यीशु का आदर करते हैं?

आज कई लोग जो अपने आप को मसीही कहते हैं, वे अपने जीवनों तथा चाल-चलन से यीशु का आदर नहीं करते। बाइबल हमें बताती है कि हमें यीशु का आदर करना है। यूहन्ना 5:23 में लिखा है, ''इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें, जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता जिसने उसे भेजा है, उसका आदर नहीं करता। यदि आप यीशु का आदर नहीं करते तो आप परमेश्वर का भी आदर नहीं करते क्योंकि पुत्र और पिता आपस में जुड़े हुए हैं। (यूहन्ना 1:1-5) और 14 पद। यीशु ने कहा था कि ''मार्ग और सच्चाई तथा जीवन मैं ही हूं।'' (यूहन्ना 14:6)। अपने इस लेख में हम कुछ ऐसी बातों को देखना चाहेंगे जिनके द्वारा हम यीशु का आदर करते हैं।

हम सबसे पहिले यह देखते हैं कि जब हम यीशु का अंगीकार करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है तब हम उसका आदर करते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, ''विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर लें, जिस के लिये बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था। (1 तीमु. 6:12)। यीशु मसीह जगत का उद्धारकर्त्ता है। प्रेरित पतरस ने भी यीशु का अंगीकार किया था कि वह जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। (मत्ती 16:16)। ईथीओपिया की रानी के खंजाची ने भी यह अंगीकार किया था (प्रेरितों 8:36-37)। यदि हम यीशु का अंगीकार नहीं करेंगे तो यीशु भी हमारा इंकार कर देगा। (मत्ती 10) पौलुस ने कहा था कि परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलि. 2:4)।

यीशु ने आज्ञा देकर कहा था कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16) जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब हम यीशु का आदर करते हैं क्योंकि यह उसकी आज्ञा है। जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है

तब वह यीशु की मृत्यु और जी उठने की समानता में हो जाता है। (रोमियों 6; 3-4)। जो लोग कहते हैं कि बपतिस्मा लेना कोई आवश्यक नहीं है वह यीशु का अनादर करते हैं।

मसीही लोग रविवार के दिन आराधना के लिये जमा होते हैं। नये नियम के मसीही कभी भी उपासना में जाने से पीछे नहीं हटते। वे प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु भोज लेते है। (प्रेरितों 20:7) एक सच्चा मसीही कभी भी प्रभु भोज मिस नहीं करेगा। क्योंकि प्रभु भोज के द्वारा हम यीशु के महान बलिदान को याद करते हैं। (लूका 22:19-20) प्रेरितों 2:42 में हम पढ़ते हैं कि जिन 3000 लोगों ने पतरस के प्रचार को सुनकर बपतिस्मा लिया था वे प्रत्येक सप्ताह प्रभु भोज में भाग लेते थे। नये नियम की आराधना का प्रभु भोज एक ऐसा भाग है जिसे मसीही लोग बहुत महत्व देते हैं और पूरा प्रयत्न करते हैं कि इसे मिस न करें। परन्तु जो जान बूझकर प्रभु भोज मिस करते हैं वे यीशु का अनादर करते हैं। (इब्रानियों 10:23-26)।

एक और विशेष बात जो हमें जानने की आवश्यकता है कि जब हम यीशु का नाम अपने उपर रखते हैं तब हम उसका आदर करते हैं। अब कई लोगों से हम पूछते हैं कि आप धार्मिक रूप से कौन हो तो कई विश्वासी कहते हैं कि मैं तो कैथोलिक हूं, लूथरन हूं अथवा मैनोनाईट हु, बैपटिस्ट या मैथेडिस्ट हूं। यह सब साम्प्दायिक नाम हैं। इन नामों से मसीह को आदर नहीं मिलता। पतरस ने कहा था यदि कोई मसीही (क्रिश्चन) होने के कारण दु:ख पाए तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे। (1 पतरस 4:16)। चेलों को एक नया नाम दिया गया था यानि वे सबसे पहिले अन्ताकिया नामक स्थान पर मसीही कहलाये। (प्रेरितों 11:26)। कलीसिया मसीह की दुलहन है और एक पत्नी अपने पति का नाम अपने ऊपर रखती है। (2 कुरि. 11:2) यानि मसीह की कलीसिया (रोमियों 16:16)।

फिर हम यह देखते हैं कि जब हम नये नियम अनुसार चलते हैं तब हम यीशु का आदर करते हैं क्योंकि नया नियम यीशु के द्वारा आया। पुराना नियम इस्रायलियों के लिये था जो मूसा के द्वारा दिया गया था। पुराने नियम को यीशु ने क्रूस पर कीलों से जड़ दिया था। (कुलु. 2:14)। हम मसीही लोग सारी बातें नये नियम अनुसार करते हैं और इसके द्वारा उसका आदर करते हैं।

एक और विशेष बात यह है कि मसीही लोग यीशु जैसा स्वभाव रखकर उसका आदर करते हैं। यीशु का स्वभाव नम्र था, इसलिये मसीहियों को भी नम्र स्वभाव का होना चाहिए। (फिलि. 2:5)।

अन्त में हम यह देखते हैं कि जब हम सुसमाचार को मानकर बपतिस्मा लेते हैं तब हम यीशु का आदर करते हैं। यदि आप यीशु में विश्वास करते हैं तो अपना मन बुराई से फेरकर बपतिस्मा लीजिये (प्रेरितों 2:38), यीशु के वायदे अनुसार आपके पाप क्षमा होंगे और आपको अनन्त जीवन की आशा मिलेगी।

---

# मसीही जीवन की श्रेष्ठता

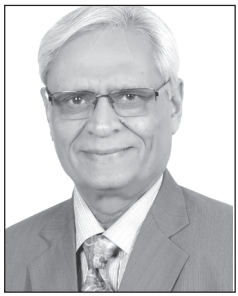

## सनी डेविड

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल से हम यह सीखते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर दो खास कामों को करने के लिए आया था। उनमें से एक काम तो प्रभु यीशु मसीह ने यह किया था कि उसने अपने जीवन से और अपनी शिक्षाओं से सब लोगों को यह सिखाया था कि हमें जीवन भर किस तरह से जीवन व्यतीत करना चाहिए। ऐसे जीवन जिनकी इच्छा परमेश्वर हमसे रखता है। और दूसरा महान काम प्रभु यीशु मसीह ने यह किया था कि उसने परमेश्वर की इच्छा से सारी मानवता के पापों को अपने ऊपर ले लिया था। और सब इंसानों को पाप से मुक्ति देने के लिये, उसने सब के पापों के बदले में अपना बलिदान दे दिया था। यानि, वह परमेश्वर की दृष्टि में, और परमेश्वर के लेखे में, संसार के सब लोगों के बदले में क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था। सो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने न केवल जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित किया था, पर उसने ऐसा आदर्शपूर्ण जीवन भी व्यतीत किया था, पृथ्वी पर, और ऐसी-ऐसी शिक्षाएं सिखाई दी थीं, जिनका पालन करके प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने पापों से मुक्ति पाकर परमेश्वर के योग्य जीवन व्यतीत करके उसके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने की आशा प्राप्त कर सकता है।

जहां कहीं भी लोग प्रभु यीशु मसीह के मुक्ति के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, और उसके जीवन के आदर्श का पालन करते हैं, वे मसीह के अनुयायी बन जाते हैं। वे ही लोग ''मसीही'' कहलाते हैं। और सामूहिक दृष्टिकोण से, अर्थात उन में से कुछ लोग जब एक जगह इक्ट्ठे होते हैं तो उन्हें मसीह की कलीसिया यानि ''मसीह की मण्डली'' कहा जाता है।

लेकिन मसीहीयत या मसीही लोगों के बारे में आज बहुतेरे लोगों के मनों में कुछ गलत धारणाएं भी हैं। कुछ तो इसलिये हैं, क्योंकि उन्होंने इधर-उधर से कुछ गलत ओर झूठी बातों पर विश्वास किया है। और दूसरा कारण यह है, कि उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को देखा है, या वे उन्हें जानते हैं जो अपने आप को मसीही या ''ईसाई'' तो कहते हैं पर उनके जीवन और चाल-चलन और व्यवहार और बातचीत और रहन-सहन, सबसे गंदगी की बू आती है। सो, मेरा आपसे निवेदन है कि ऐसे लोगों को देखकर आप मसीहीयत से नफरत न करें- क्योंकि ऐसे लोग वास्तव में मसीही नहीं हैं- वे तो केवल नाम के मसीही हैं और वास्तव में मसीहीयत के ऊपर एक कलंक हैं।

पर बाइबल जिस मसीहीयत के बारे में या मसीही लोगों के बारे में हमें बताती हैं; बाइबल कहती है कि वे लोग एक ''नई सृष्टि'' है; और उनका नया जन्म हुआ है। (2 कुरिन्थियों 5:17 तथा यूहन्ना 3:3, 5)। बाइबल में एक जगह पर इस प्रकार लिखा हुआ है, कि ''क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के

वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न शराब पीने वाले, न गाली देने वाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर की आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे। (1 कुरिन्थियों 6:9-11)।

सो क्या कहती है बाइबल, मसीही लोगों के बारे में? बाइबल कहती है, कि मसीही लोग वे लोग हैं, जो अपने पापों से धोए गए हैं, और पवित्र बने हैं और धर्मी ठहरे हैं। यानि पहले, मसीही बनने से पहले, वे संसार में सब तरह के सांसारिक और गंदे काम करते थे। पर अब क्योंकि उन्होंने अपने ऊपर मसीह को धारण कर लिया है; क्योंकि अब वे मसीह ने अनुयायी बन गए हैं; क्योंकि उन्होंने उसमें विश्वास लाकर प्रत्येक बुरे काम से अपना-अपना मन फिराया है, और उसकी आज्ञा मानकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है। तो इसलिये अब वे पहले का सा जीवन व्यतीत नहीं करते। उनके विचार, उनकी बातचीत, उनका चाल-चलन, उनका दृष्टिकोण, सब कुछ बदल गया है। अब वे मुंह से गंदी बातें नहीं बोलते। अब वे लड़ाई-झगड़ा नहीं करते। अब वे मार पीट नहीं करते। अब वे शराब नहीं पीते; और किसी प्रकार का भी नशा नहीं करते क्योंकि अब वे मसीही है। वे सबसे प्रेम करते हैं। सबका आदर करते हैं। वे किसी की बुराई नहीं करते। और किसी का भी बुरा नहीं चाहते। वास्तव में मसीही लोग पृथ्वी पर सबसे अच्छे और सबसे भले लोग हैं। क्योंकि वे मसीह के आदर्शों पर चलने का प्रयत्न करते हैं।

एक जगह बाइबल में, मसीही लोगों को लिखकर इस प्रकार कहा गया है, कि ''सो जबकि तुम मसीह के साथ जिलाए गए'', अर्थात पाप से मन फिराकर तुम पाप के लिये मर गए; और बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी की कब्र में मसीह के साथ गाड़े गए; और उसमें से बाहर आकर नए जीवन की चाल चलने के लिये, जिलाए गए, ''तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है, और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा, और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। और तुम भी जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर अब तुम भी इन सब को, अर्थात क्रोध, रोष, बैर-भाव, निंदा और मुंह से गालियां बकना, ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए बनता जाता है। इसलिये, परमेश्वर के चुने हुए लोगों की तरह, जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा और भलाई, और दीनता और नम्रता और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध को क्षमा करो, जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर, प्रेम

को, जो सिद्धाता का कटिबंध है, बांध लो।'' (कुलुस्सियों 3:5-14)।

सो, हम क्या सीखते हैं आज के पाठ से? हम यह सीखते हैं, कि मसीही जीवन पृथ्वी पर सबसे उत्तम जीवन है। यह एक ऐसा जीवन है, जिसकी आशा परमेश्वर जमीन पर हर एक इंसान से करता है। और मसीह के अनुयायी बनने से न केवल पृथ्वी पर हमारे जीवन बदल जाते हैं। पर उसमें होकर और उसमें जीवन व्यतीत करने से न केवल पृथ्वी पर हमारे जीवन बदल जाते हैं। पर उसमें होकर और उसमें जीवन व्यतीत करने से हमें यह आशा भी मिलती है कि पृथ्वी पर के इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद हमें परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में हमेशा का जीवन मिलेगा। और यही कारण है, कि मैं क्यों बार-बार आपको मसीह के पास आने का नियंत्रण देता हूं। और आज भी मेरा आपसे यही आग्रह है, कि मसीह के पास आएं। उसमें विश्वास लाएं; अपना मन फिराएं; और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लें।

---

# उपासक

## जे. सी. चोट

परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि में केवल एक ही ऐसा प्राणी है जो उसकी उपासना कर सकता है, और वह मनुष्य है। परमेश्वर ने मनुष्य को केवल एक देह के साथ ही नहीं बनाया है परन्तु उसे एक आत्मा तथा बुद्धि भी दी है। इसलिये, अपनी बुद्धि के द्वारा मनुष्य चुनाव कर सकता है। वह अपने बनाने वाले की उपासना करने या न करने का निश्चय कर सकता है। जब मनुष्य परमेश्वर की उपासना करने का निश्चय करता है केवल तभी वह उसकी प्रशंसा तथा आदर का कारण ठहरता है।

मनुष्य स्वभाव से ही उपासना करने वाला एक प्राणी है। वह किसी वस्तु या प्राणी की उपासना करना चाहता है। उसने हमेशा से ऐसा किया है और जब तक यह सृष्टि बनी है वह सदा ऐसा ही करता रहेगा। बीते हुए समय से लेकर आज तक मनुष्य प्रत्येक उस वस्तु के सामने झुकता चला आया है जिसकी कल्पना की जा सकती है, जिनमें सूरज, चांद, सितारे, पत्थर, नदियां तथा सृष्टि की अन्य वस्तुएं सम्मिलित हैं। इसी प्रकार, मनुष्यों की कारीगरी से बनाई गई पत्थर और लकड़ी इत्यादि की मूर्त्तों के सामने भी मनुष्य सदा झुकता रहा है। परन्तु यदि मनुष्य उपासना करना चाहता है तो उसे परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए जिसने उसे बनाया है। और वास्तव में, परमेश्वर ऐसे ही उपासकों की उपासना चाहता है।

प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। (यूहन्ना 4:23, 24)। सो

मनुष्य के लिये उपासना करना ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु उसकी उपासना को परमेश्वर के निकट ग्रहणयोग्य होने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य की उपासना आत्मा और सच्चाई के साथ हो। अब इसका अर्थ क्या है, इसी बात के ऊपर हम यहां विचार करेंगे।

1. हम सब सच्चे तथा जीवते परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकते है- सम्पूर्ण सृष्टि हमारा ध्यान एक सृष्टिकर्त्ता की ओर दिलाती है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता, और सभी मनुष्य जो समझदार है, इस बात को ध्यान में रखकर, इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि सृष्टि का कोई बनाने वाला है। और हम जानते हैं कि सच्चा तथा जीवता परमेश्वर ही सब चीजों का बनाने वाला है। (उत्पत्ति 1:1)।

2. यदि सब वस्तुओं का बनाने वाला परमेश्वर है, और यदि वह चाहता है कि मनुष्य उसकी इच्छा पर चले तो अवश्य ही अपनी इच्छा को उसने मनुष्य पर प्रगट किया है। और यह सच है। बाइबल के द्वारा उसने इस काम को किया है। बाइबल हमें बताती है कि जितनी भी बातें यीशु मसीह के संबंध में लिखी गई हैं वे सब इस लिये लिखी गई है ताकि हम उसमें विश्वास लाए। (यूहन्ना 20:30-31)। फिर हम यह भी पढ़ते हैं कि पवित्र शास्त्र की पुस्तकों को परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया हैं (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

3. सो क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन को प्रकट किया है, और उसे बाइबल में लिखवाकर हमें दिया है, इसलिये मनुष्य के लिये उसे जानना और उसका ज्ञान प्राप्त करना तथा उसे मानना संभव है। यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को सारे संसार में सृष्टि के सारे लोगों को सुसमाचार सुनाने की आज्ञा देकर भेजा था (मरकुस 16:15, 16)। फिर उसने यह भी कहा था कि जो लोग परमेश्वर की धार्मिकता के भूखे या प्यासे हैं वे तृप्त किए जाएंगे। (मत्ती 5:6)। और फिर यह भी लिखा है कि जो लोग प्रभु को ग्रहण करेंगे उन्हें वह परमेश्वर के संतान होने का अधिकार या अवसर देगा। (यूहन्ना 1:12)।

4. जब मनुष्य परमेश्वर के वचन को पढ़ता वा उसका अध्ययन करता है, तो उसके मन से विश्वास आता है। (रोमियों 10:17)। ज्ञान प्राप्त करके तथा विश्वास लाकर जब मनुष्य प्रभु की आज्ञा का पालन करता है तो उसका परिणाम उद्धार होता है। (प्रेरितों 2:38; 17:30; इब्रानियों 11:6)।

5. आज्ञा मानकर उद्धार प्राप्त कर लेने पर प्रभु उस मनुष्य को अपनी कलीसिया (मंडली) में मिला लेता है जिसमें वह एक मसीही कहलाता है। (प्रेरितों 2:47; 11:26)।

6. मसीह की कलीसिया का सदस्य तथा एक मसीही बनने के बाद मनुष्य इस योग्य हो जाता है कि वह प्रभु की उपासना उसके बताए अनुसार करे। इससे पूर्व उसकी उपासना पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं हो सकती। क्योंकि लिखा है, हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है तो वह उसकी सुनता है। (यूहन्ना 9:31)। यहां इस बात पर ध्यान दें कि प्रभु द्वारा हमारी प्रार्थना सुन लिये जाने की आशा हम केवल इन दो बातों के आधार पर ही कर सकते हैं, पहिले तो यह, कि मनुष्य परमेश्वर का

भक्त हो, और दूसरे यह कि वह परमेश्वर की इच्छा पर चलता हो। उसका संबंध इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के साथ सही हो, अर्थात एक संतान और पिता का संबंध हो यानि वह एक मसीही और प्रभु की कलीसिया का एक सदस्य हो।

7. एक मसीही तथा प्रभु की कलीसिया का एक सदस्य होने पर भी इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि उपासना परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने के लिये आत्मा तथा सच्चाई के साथ की जाए। इसका अर्थ यह है, कि उपासना मन की सीधाई के साथ की जाए। अर्थात वह मन से सारी दीनता के साथ, पूरी ईमानदारी और भक्ति के साथ की जाए। ऐसा करने के लिए मन की शुद्धता की आवश्यकता होगी और उन बातों पर ध्यान लगाने की आवश्यकता होगी जिन्हें उपासना में किया जा रहा है। ठंडे दिल से, बिना सोचे-समझे, और उन सब बातों की ओर ध्यान दिये बिना जो उपासना में की जा रही हैं, उपासना वास्तव में नहीं की जा सकती। ऐसा ठट्ठा करने के समान होगा। फिर, यह भी आवश्यक है, कि उपासना सारी सच्चाई से की जाए। अर्थात वह परमेश्वर के वचन की शिक्षानुसार हो। सो अब प्रश्न यह है कि इस संबंध में प्रभु की इच्छा क्या है? अपने अध्ययन में आगे चलकर हम देखेंगे कि प्रभु की इच्छानुसार उसकी उपासना में बाइबल अध्ययन प्रार्थना, गीत गाना, प्रभु भोज लेना, तथा चंदा देना सम्मिलित है। हम यह भी देखेंगे कि ये सभी नियम उस दिन में पालन किए जाने चाहिए जिस प्रभु ने निश्चित किया है। अब चाहे कोई कितना भी ईमानदार तथा श्रद्धालु क्यों न हो, किन्तु यदि उसकी उपासना सच्चाई के साथ नहीं है तो वह उपासना व्यर्थ है। इसी प्रकार, यद्यपि कोई उपासना के नियमों को प्रभु की शिक्षानुसार मानता हो, परन्तु यदि उसकी उपासना आत्मा के साथ या समझ के साथ न हो, तो उसकी उपासना व्यर्थ ठहरेगी। परमेश्वर ने इस बात को प्रकट किया है, कि वह मनुष्य से किस तरह की उपासना चाहता है, और उसकी इच्छा को मानना हमारे लिये आवश्यक है।

8. उपासना को स्वीकार होने के लिये यह भी आवश्यक है कि उपासक उचित स्थान (प्रभु की कलीसिया के बीच) में, उचित लोगों के साथ हो तथा उन सब नियमों को मानें जिनकी आज्ञा प्रभु ने दी है।

यहां संगति का एक बड़ा ही विशेष स्थान है। एक सच्चा मसीही साम्प्रदायिक कलीसियाओं तथा इसी प्रकार के अन्य धार्मिक संगठनों के साथ जमा होकर उपासना नहीं कर सकता, क्योंकि उनकी उपासना उस उपासना से बिल्कुल भिन्न होती है जिसका वर्णन अभी किया गया है। एक सच्चा मसीही व्यक्ति, प्रभु की कलीसिया का सदस्य, पवित्र शास्त्र अनुसार शनीवार को उपासना नहीं कर सकता। इसी तरह वह उनके साथ उपासना नहीं कर सकता जो मनुष्यों की किताबों में लिखे धर्मोपदेशों के द्वारा उपासना करते हैं, या जो बाजों के साथ गाते हैं; या जो रविवार को प्रभु भोज नहीं लेते हैं; और जिनके दश मांश तथा दान गलत शिक्षाओं को बढ़ावा देते हैं। पौलुस कहता है, अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। (इफिसियों 5:11)। यूहन्ना झूठे प्रचारकों को सम्बोधित करके, लिखकर कहता है, क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है। (2 यूहन्ना 11)।

9. स्वयं उपासक–यद्यपि उपासक एक सिद्ध व्यक्ति नहीं है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इस बात के कारण वह जैसा चाहे वैसा जीवन व्यतीत कर सकता है। यदि वह प्रभु की उपासना करना चाहता है तो उसे अपनी बुरी आदतों तथा बुरे व्यवहारों को छोड़कर (यकूब 5:17), एक शुद्ध हृदय तथा स्वच्छ देह, और आत्मा की दीनता के साथ प्रभु की उपासना करने का यत्न करना चाहिए।

अब, आप किस प्रकार के उपासक हैं? आप कब उपासना करते हैं? आप क्यों उपासना करते हैं? आप किसकी उपासना करते हैं? उपासक तो बहुतेरे हैं, परन्तु सच्ची उपासना करने वाले बहुत कम है। अधिकांश लोग या तो गलत व्यक्ति की उपासना करते हैं या फिर गलत तरीके से करते हैं। सो इस बात को निश्चित रूप से जान लें, कि जब आप उपासना करें तो केवल उसी की उपासना करें जिसकी उपासना वास्तव में की जानी चाहिए, और आपकी उपासना उचित रूप में हो, और आप उस प्रकार के एक जन हों जिसकी उपासना को प्रभु चाहता है।

---

# आपका पैसा

## ऐरन डेविड

यदि आपके पास पैसा है तो आपको यह आजादी है कि आप उसे जैसा चाहे खर्च कर सकते हैं। परन्तु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर एक बात कही थी, कि ''चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाएं रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता'' (लूका 12:15)। एक कहानी जो यीशु ने बताई थी वो एक धनवान मनुष्य के बारे में यानि पैसे वाला आदमी। इस आदमी के पास बहुत सारी सम्पत्ति थी और वह बहुत सारी वस्तुओं का मालिक था। (लूका 16) यीशु ने कहा था ''जो थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में सच्चा है और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?'' ''कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।'' (लूका 16:10–13)। आज पूरा संसार बेसबरी से पैसे के पीछे भाग रहा है। यीशु ने कहा था कि परमेश्वर के लोगों को सबसे पहिले उसके राज्य और धर्म को खोजना चाहिए। (मत्ती 6:33)।

यीशु ने कहा था जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा (मत्ती 6) यदि आपके पास पैसा है तो बहुत अच्छी बात है परन्तु बात यह है कि क्या आप अपने पैसे को अच्छे कार्य में लगाते हैं? जब आप परमेश्वर के कार्य के लिये देते हैं तब आप स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करते हैं। जब आप निर्धनों की

सहायता करते हैं तब आप स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करते हैं। अमीर बनने में कोई बुराई नहीं है लेकिन यह कोशिश करें कि आप परमेश्वर की नजर में धनी बनिये। (1 तीमु. 6:17-19) जिस धनवान व्यक्ति के बारे में हम पढ़ते हैं वह परमेश्वर की नजर में धनी नहीं था। वह स्वार्थी था। आपको अपना पैसा खर्च करने की पूरी स्वतंत्रता है क्योंकि यह आपका पैसा है, परन्तु मेरी आपसे विनती है, कि जब आपके पास पैसा हो तो परमेश्वर और निर्धनों को मत भूलिये नीतिवचन का लेखक कहता है, जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है। और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा (नीतिवचन 19:17) याद रखिये यीशु की बात- ''अपने लिये पृथ्वी पर धन इक्ट्ठा न करो; जहां कीड़ा और कोई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं, परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।'' (मत्ती 6)।

---

# घर में धीरज ( सहनशीलता )

**( गलातियों 5:22, 23 )**

## कोय रोपर

पवित्र आत्मा के फल की चौथी विशेषता धीरज या सहनशीलता है। इस पाठ का विषय यह है कि धीरज से घर में स्थायीत्व बनाने में सहायता मिलेगी।

हमें स्थायीत्व पर संदेश में दिलचस्पी होनी चाहिए, क्योंकि घरों में, चाहे वह मसीही घर ही क्यों न हो, इतना अधिक अस्थायीपन पाया जाता है। हमारे आस-पास के कई घर टूट रहे हैं, चाहे पति या पत्नी में एक या दोनों मसीही क्यों न हो।

हमारा उद्देश्य उन लोगों को डांटना नहीं है, जिन्होंने तलाक ले लिया है। इसके विपरीत हमारा उद्देश्य विवाहित लोगों या विवाह करने की योजना बना रहे लोगों को सहायता देने की कोशिश करना है जिससे उनका विवाह मजबूत बना रहे। चाहे हमारे अपने विवाह बने रहे हों या न, विवाहों के स्थायीत्व को बढ़ावा देने में दिलचस्पी होनी चाहिए।

एक परिवार कैसे टूट जाता है? टूटे हुए परिवार में पति और पत्नी का आमतौर पर तुरन्त उत्तर होता है। उसने झूठ बोला। इसने चोरी की, वह गैर जिम्मेदार था, हमारी किसी बात पर सहमति हो ही नहीं सकती। वह बेवकूफ और ढीठ था। वह मुझे मारता-पीटता था, ऐसी असफलताओं से सचमुच घर टूट सकता है?

क्या ऐसी समस्याओं का सामना करने वाला हर दम्पत्ति तलाक ले लेता है? इसका उत्तर है नहीं। पाप, त्रुटि, गलती या दोष जो भी हो, किसी को उसके साथ रहना सीखकर विवाह को बनाए रखना आवश्यक है।

धीरज या सहनशीलता में इसके साथ जीना या इसे बर्दाशत करना भी तो है। इस पाठ में हम इसी पर बात कर रहे हैं।

परन्तु इस प्वाइंट को विस्तार देने से पहले हमें व्यापक संदर्भ में अपनी चर्चा को रखना आवश्यक है और वह संदर्भ झगड़े का समाधान है। घर में झगड़ों को निपटाने के

लिए हमें क्या करना चाहिए? एक व्यक्ति के दूसरे को निराश करने या आहत करने पर, या पति या पत्नी के आपस में असहमत होने की समस्याओं को कैसे सुलझाया जा सकता है?

### बाइबल झगड़े के समाधान के लिए मार्ग दर्शन देती है

पवित्र शास्त्र हमें दो लोगों के बीच झगड़े निपटाने के लिए परमेश्वर का ढंग बताता है। उसमें सुधार का एक ही तरीका है, कि झगड़े आरंभ होने से पहले ही बंद हो जाए।

### झगड़ों से परहेज करना

परहेज सबसे अच्छा इलाज है। समस्याओं को रोकने के लिए कौन से कुछ कदम उठाए जा सकते हैं? परहेज में सबसे पहले तो सही व्यक्ति से विवाह करना यानी किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना शामिल है जिससे बार-बार अनबन होने की बात न हो। सही जीवन साथी चुनना कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है? चार सुझावों से सहायता मिल सकती है।

1. मसीही व्यक्ति से विवाह करें जो विश्वासी मसीह हो।
2. अच्छे व्यक्ति से यानी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जो विवेकी, दयालु और प्रेमी हो जो परवाह करने वाला, जिम्मेदार और ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जाता हो।
3. समान पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति से विवाह करें; जितना दोनों के विचार मिलते होंगे उतना ही विवाह सफल होगा।
4. सबसे बढ़कर विवाह केवल किसी सुन्दर लड़की या जवान आदमी के साथ प्रेम हो जाने के आधार पर ही न करें। केवल सुन्दरता या शारीरिक आकर्षण के आधार पर किए गए विवाह के अधिक देर चलने की आशा कम है।

इसके अलावा, झगड़े से परहेज में एक-दूसरे के साथ सही व्यवहार करने की हमारी अपनी कोशिश भी है। इसमें प्रेम करने वाले, शिष्टाचारी और दयालु होना शामिल है। यदि विवाह में दोनों जन एक दूसरे को संतुष्ट करने की कोशिश करते और दूसरे की सेवा की तलाश में रहें तो झगड़े पैदा होने की बहुत कम उम्मीद है। इसके अलावा जो बात पति और पत्नी के लिए है वही घर में दूसरे सदस्यों के लिए भी है। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ सही व्यवहार करना आवश्यक है (इफिसियों 6:4)। बच्चों के लिए एक-दूसरे के साथ सही व्यवहार करना आवश्यक हैं और झगड़ों के उपचार का सबसे बढ़िया तरीका उन्हें मसीही नियमों की उदार प्रासंगिकता के द्वारा उन से परहेज रखना है।

हमारी हर कोशिश के बावजूद झगड़े होते ही रहेंगे। हम फिर भी कभी न कभी एक-दूसरे को आहत कर ही देंगे। तब हमें क्या करना चाहिए?

### झगड़ों से निपटने में बाइबल के मार्ग दर्शनों को मानना

गलती हो जाने पर हमें उस समस्या के समाधान के लिए जो बाइबल कहती है वही करना आवश्यक है। बुनियादी तौर पर बाइबल चाहती हैं कि ठोकर देने वाला कोई ठोकर खाने वाले के पास जाए।

यदि परिवार के किसी सदस्य ने घर के किसी व्यक्ति के विरूद्ध पाप किया है, तो यह उसी की जिम्मेदारी है कि यह समझ आने पर कि इसमें गड़बड़ है वह जितनी

जल्दी हो सके उसके पास जाए जिसका उसने दिल दुखाया है (मत्ती 5:23, 24)। ठोकर देने वाले को जिसका उसने पाप किया है उसके पास जाकर क्या करना चाहिए? वह अपने पाप को मान ले (याकूब 5:16)। उसे बिना बहाना बनाए (माफ करना, पर आप भी गलत थे) और बिना जवाबी हमला किए (मेरी नीयत साफ थी) यह मान लेना चाहिए कि वह गलत था और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसके अलावा उसे सच्चे मन से दिखाना चाहिए कि वह शर्मिंदा है और ऐसा कभी दोबारा करने की कोशिश नहीं करेगा। फिर ठोकर खाया हुआ व्यक्ति, यानी जिसका अपराध हुआ है, कहे क्षमा किया और यह दिल से कहे।

पाप जिसने भी किया, इसी नमूने का पालन किया जाना चाहिए। मसीही लोगों को एक-दूसरे के सामने अपनी गलतियों को मान लेना चाहिए। बच्चों को अपने पाप को अपने माता-पिता के सामने मान लेना चाहिए, माता-पिता को अपनी गलती अपने बच्चों के सामने मान लेना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि कोई माता या पिता गलती करता है, तो उसे अपने बच्चे से यह कहना चाहिए, मैंने तुम्हारे साथ ऐसा करके या कहके गलती की और मैं बहुत शर्मिंदा हूं।

गलती को मान लेने के बाद, गलती करने वाला और जिसका अपराध किया गया है, इक्ट्ठे प्रार्थना करें। दोनों यह मानते हुए कि परमेश्वर क्षमा कर देगा, गलती करने वाले के लिए परमेश्वर से क्षमा मांग सकते हैं।

यदि किसी को लगे कि घर में किसी दूसरे ने उसका अपराध किया है, तो झगड़े के निपटारे के लिए बाइबल वाला फार्मूला वैसे ही आरंभ होता है, परिवार के उस सदस्य के पास (मत्ती 18:15)। जिसका अपराध हुआ है, वह अपराध करने वाले परिवार के सदस्य के पास अकेले में जाकर समस्या को सुलझाने की कोशिश कर सकता है। उसे अपने जाने के ढंग पर चौकस रहना है क्यांकि किसी की अनुमानित गलती के बारे में किसी से बात करने के लिए जाने से अच्छा, बढ़िया और बहुत बढ़िया हो सकता है। सही रास्ते में, सही समय की तलाश में, अपनी बात की योजना बनाने के लिए जाना और जाने में सही व्यवहार रखना आवश्यक है, परन्तु मुख्य बात जाना ही है। इसके अलावा यह काम जल्दी से हो जाना आवश्यक है। इफिसियों 4:26 कहता है, सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। विवाहित दम्पत्तियों के लिए बढ़िया नियम है बिस्तर पर क्रोध से न जाओ।

### झगड़ा निपटाने की बाइबल की योजना अगर काम न करे?

कई बार झगड़ा निपटाने की बाइबल की योजना काम नहीं करती। यानी कोमलता से बात करने से हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति मन फिराकर अपने व्यवहार को न बदले।

### लोग बदलेंगे क्यों नहीं?

क्यों नहीं? हम यह मान लेते हैं कि दूसरा व्यक्ति उसकी गलती की बात उससे किए जाने पर नहीं बदलता तो वह ढीठ, अड़ियल या दुष्ट है। परन्तु डांट को न मानने के उसके और कारण भी हो सकते हैं।

बदलने की आवश्यकता पर सहमत होने में नाकामी। एक संभावना यह है कि वह शायद इसलिए नहीं बदलता क्योंकि वह यह मानने को तैयार नहीं है कि जो वह कर रहा

है उसमें कोई बुराई है। हो सकता है कि पत्नी इसलिए परेशान है क्योंकि उसका पति गंदे कपड़े फर्श पर पड़े रहने देता है। वह उससे अपने कपड़े उठवाने की कोशिश करती है पर वह उसकी बात पर ध्यान देता नहीं है। वह क्यों नहीं बदलेगा? हो सकता है कि उसकी बीस साल पुरानी आदत जिसे तोड़ना कठिन है। हो सकता है कि उसके बचपन में, वह या उसका पिता गंदे कपड़े फर्श पर रहने देता था और उसकी मां उन्हें उठा लेती थी। शायद उसे नहीं लगता कि इसका कोई कारण है क्योंकि उसकी मां उसके गंदे कपड़े उठा लेती थी, इसलिए शायद उसे लगता हैं कि उसकी पत्नी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए। उसे लगता है कि उसके कपड़े उठाना कमजोरों का प्रतीक है या उसके मर्द होने पर धब्बा है। जो भी कारण हो, वह यह नहीं मानता कि उसे अपने गंदे कपड़े उठाने चाहिए।

मानवीय निर्बलता पति या पत्नी के किसी मामले पर बाइबल के ढंग पर आने के बाद बदलने में नाकाम रहने पर एक और संभावना है कि वह कमजोर है और परीक्षा का सामना नहीं कर सकता या सकती। शायद यह संभावना शराबी पति या पत्नी के मामले में समझानी सबसे आसान है। कितनी भी फटकार डांट या मिन्नतें शराबी की समस्याओं को सुलझा नहीं सकती। शराब के आदी व्यक्ति की लाख कोशिश करने के बावजूद, अधिक संभावना यही बनी रहती है कि वह शराब फिर से पीने लगेगा। शराब पीने जैसे कई ऐसी कमजोरियां हैं जिन पर काबू पाना लगभग उतना ही कठिन है। जब घर में कोई गलत व्यवहार को बदल नहीं पाता तो उसे व्यक्तिगत कमजोरी के कारण पाप के चुंगल से छूटना कठिन हो सकता है। ऐसे मामले में परिवार के लोगों को समझना आवश्यक है कि उसे सहायता की आवश्यकता है।

---

# बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार ( 2 )

## जॉन स्टेसी

अब तब हमने इस बात को देखा है कि बाइबल यह सिखाती है कि केवल विश्वास आज्ञा माने बिना किसी का उद्धार नहीं कर सकता और विश्वास लाने के साथ, उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना भी जरूरी है। (याकूब 2:24-26, लूका 6:46 तथा मत्ती 7:21-23)। हमने यह भी देखा था बाइबल से, कि यदि मनुष्य यीशु में विश्वास कर भी लें, लेकिन उसकी आज्ञाओं को न माने तो वह उद्धार नहीं पाएगा। (यूहन्ना 12:42, 43; याकूब 2:19)। इस बात को भी स्पष्ट रूप से देखा गया था कि विश्वास लाना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक यह भी है कि पाप से मुक्ति पाने के लिये प्रभु की आज्ञाओं का भी पालन किया जाए। (रोमियों 10:13-14, प्रेरितों 17:30-31, रोमियों 10:9-20, प्रेरितों 2:38 तथा 2:16 और 1 पतरस 3:21)।

इस समय अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि जो लोग ऐसा मानते हैं कि मनुष्य का उद्धार मसीह पर केवल विश्वास कर लेने से ही हो सकता है, वे मुख्य रूप से क्या गलती कर रहे हैं। सबसे पहली बात इस संबंध में हम यह देखते हैं

कि वे उन आयतों को पूरी तरह से नहीं पढ़ते हैं जहां बाइबल सिखाती है कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए। बाइबल के उन पदों पर वे विचार ही नहीं करते जहां विश्वास के अतिरिक्त कुछ अन्य बातों को भी उद्धार पाने के लिये आवश्यक बताया गया है, जैसे प्रेरितों 11:18 जहां लिखा है, तब तो परमेश्वर ने अन्य जातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है। सो हम देखते हैं कि उद्धार पाने के लिये मन फिराना भी उतना ही जरूरी है जितना कि विश्वास लाना। फिर रोमियों 10:9-10 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगिकार किया जाता है। सो अपने विश्वास का मुंह से अंगीकार करना भी उद्धार पाने के लिये जरूरी है। ऐसे ही प्रेरितों 2:38 जैसे बाइबल के पदों पर भी अकसर ध्यान नहीं दिया जाता। पतरस ने वहां इस प्रकार कहा था, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले... यहां इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये या पाने के लिये लेने को कहा गया है, न कि इसलिये कि पाप क्षमा हो चुके हैं सो बपतिस्मा ले लो। प्रेरितों 22:16 में बपतिस्मा लेने के महत्व को यह कहकर प्रकट किया गया है, कि अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। किन्तु वे कहते हैं कि रोमियों 5:1 में तो लिखा है, सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। यहां तो बपतिस्मा लेने की बात को कहा नहीं गया है। लेकिन क्या बाइबल में ऐसे पद नहीं है जहां उद्धार पाने के लिए मन फिराने को कहा गया है तोभी उन पदों में विश्वास का वर्णन तक नहीं है? किन्तु क्या इस से हमें यह समझ लेना चाहिए कि उद्धार पाने के लिये विश्वास लाने की आवश्यकता ही नहीं है? 1 पतरस 3:21 में हम पढ़ते हैं कि उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है।

यहां केवल बपतिस्मा लेने की बात को ही कहा गया है। अब क्या इससे हमें यह समझ लेना चाहिए कि बपतिस्मा लेना ही उद्धार पाने के लिये पर्याप्त है? बिल्कुल नहीं। जो लोग केवल विश्वास से ही उद्धार पाने की बात को उचित ठहराना चाहते हैं, वे बाइबल के उन पदों को भी ठीक से नहीं समझ सकते जिनका वर्णन अपनी बात को सही ठहराने के लिये वे करते हैं।

यह सही है कि यूहन्ना 3:16 और इफिसियों 2:8, 9 तथा रोमियों 5:1 से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये विश्वास लाना (मसीह में) आवश्यक है। परन्तु इन पदों से देखो, अभी, वह उद्धार का दिन है। केवल इच्छा करके कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता। क्या आप एक लगभग मसीही हैं?

क्यों बहुत से लोग केवल लगभग मसीही ही रह जाते हैं? सबसे पहली बात इस संबंध में यह है कि कुछ लोगों को यह आभास ही नहीं होता कि वे पाप में

खोए हुए हैं। इन में ऐसे लोग भी शामिल हैं जो अपने आपको धार्मिक समझते हैं और बाइबल के नाम पर मनुष्यों के धर्मोपदेशों का अनुसरण करते हैं। पौलुस ने कहा था, सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। (रोमियों 3:23)। फिर कुछ लोग लगभग मसीही इसलिये भी रह जाते हैं क्योंकि वे सोचते है। कि यदि वे कुछ करेंगे तो लोग उनकी हंसी उड़ाएगे। बहुतेरे ऐसे हैं जो मसीह की आज्ञा को केवल इसलिये नहीं मानते क्योंकि उन्हें डर लगता है कि उनके संबंधी और मित्र क्या कहेंगे? यीशु ने लूका 9:23 में कहा था यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। मसीही जीवन खुद इंकारी का जीवन है। इसका अर्थ यह है कि हमें मसीह के लिये सब कुछ सहन करने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिए।

तीसरे स्थान पर, बहुत से लोग संसार से इतना अधिक प्रेम रखते हैं कि वे सब कुछ त्याग कर मसीह के पास नहीं आ पाते। 1 यूहन्ना 2:15 में लिखा है कि तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। फिर कुछ लोग ऐसे है। जो अपनी ईमानदारी पर ही भरोसा करते हैं। वे कहते हैं कि यदि हम सब कुछ ईमानदारी से करते हैं तो इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता कि हमारा क्या विश्वास है। तोभी 1 पतरस 1:22 में लिखा है, सो जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, केवल सच्चाई ही हमारी आत्मा को पाप के परिणाम से बचा सकती है। (यूहन्ना 8:32)। पांचवे स्थान पर, कुछ लोग ऐसे हैं जो अपना चर्च नहीं बदलना चाहते। यद्यपि बाइबल हमें सिखाती है कि केवल एक ही कलीसिया है। इफिसियों 4:4 में लिखा है कि एक ही देह है। इफिसियों 1:22, 23 में हम पढ़ते हैं कि देह किसे कहा गया है। वहां पौलुस कहता है, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, फिर इफिसियों 4:5 में लेखक कहता है कि एक ही विश्वास है। सो हम देखते हैं कि सच्ची मसीहीयत साम्प्रदायिक नहीं है।

सच्ची कलीसिया केवल एक ही है और उद्धार पाने के लिये हम सब को उसी एक कलीसिया में होना चाहिए। पर सच्ची कलीसिया कौन सी है? सच्ची कलीसिया वह है जिसका वर्णन हमें बाइबल में मिलता है। जिस कलीसिया में आप हैं, क्या उसका नाम बाइबल में है, और क्या उसमें पाई जाने वाली शिक्षाएं बाइबल में मिलती हैं? यदि नहीं, तो आप मसीह की कलीसिया में नहीं है। पर यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं तो आपको अवश्य ही उस कलीसिया में होना चाहिए जो मसीह की है और जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है। क्योंकि इफिसियों 5:25 में पौलुस ने कहा था कि हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया। मसीह ने कलीसिया का उद्धार करने को अपने आप को बलिदान कर दिया। इफिसियों 5:23 में लिखा है कि मसीह देह का उद्धारकर्त्ता है। पर मसीह की देह मसीह की कलीसिया है।

# अधिकार का सम्मान करें ( रोमियो 13:1-7 )

## डेविड रोपर

**शासन :** परमेश्वर ने मानवीय सरकार स्थापित की, हम वचन में से देखते हैं। आयत 1 आरंभ होती है, हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे (आयत 1क) अधीन रहे यानि यह अपने आप में सहयोग, वफादारी और आज्ञा मानने की इच्छा को समेट लेता है।

जैसे लोग अच्छी सरकारों और बुरी सरकारों के बीच अन्तर करने की कोशिश करते हैं वैसे ही वह अच्छे नियम और बुरे नियम में अन्तर करने का प्रयास करते हैं। बुरे नियमों से आमतौर पर उनका अभिप्राय वे नियम हैं जिनका उनके लिए कोई अर्थ नहीं या जो नियम उन्हें असुविधा देते हैं, शायद परेशानी भी। वे यह जोर देते हैं परमेश्वर हमसे बुरे नियमों को मानने की उम्मीद नहीं करता। समय-समय पर अधिकतर लोग सरकारी नियमों और पाबंदियों से चिड़ जाते हैं। हम यातायात के नियमों, इमारतों के नियमों, करके नियमों और दफ्तरी कामकाज की नियमित प्रतिक्रिया से परेशान होते हैं। हम राजनैतिक अफसरशाही से घुटन महसूस करते हैं तौभी हमें अच्छे नियमों और बुरे नियमों में अन्तर करने का अधिकार नहीं दिया गया है। यदि यह कानून है तो हमें इसे मानना ही पड़ेगा।

क्या इस मूल नियम का कोई अपवाद है? एक ही अपवाद जो मुझे पता है वह पतरस के मुंह से निकला था उसे और यूहन्ना को यहूदी सभा द्वारा यीशु के नाम में सिखाने या प्रचार न करने का आदेश दिया गया था (प्रेरितों 4:18), जिस आज्ञा को उन्होंने अनदेखा कर दिया था। जब उन्हें सभा के सामने खींचकर लाया गया तो पतरस ने ये शानदार शब्द कहे थे, मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य है। (प्रेरितों 5:29)। हम इस नियम को अपने इस विषय पर कितना लागू कर सकते हैं? हमें देश के कानून का तब तक पालन करना चाहिए जब तक वे परमेश्वर के नियमों के विरूद्ध न हो। कई उदाहरण ध्यान में आ रहे हैं। पुराने नियम में शदरक, मेशक और अबेदनगो ने सोने की मूर्ति के सामने झुकने से इंकार कर दिया था (दानिय्येल 3) और दानिय्येल ने राजा के इस आदेश को नजरअंदाज कर दिया कि किसी और से प्रार्थना न की जाए (दानिय्येल 6)। नये नियम के समय में अंतिपास को विश्वास से मुकरने से इंकार करने के कारण शहीद कर दिया गया था (प्रकाशितवाक्य 2:13)।

इस विचार को समाप्त करने से पहले दो सच्चाइयों पर जोर दिया जाना चाहिए। पहली, जब हम मनुष्यों की बजाय परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तब परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। ध्यान करें कि प्रेरितों व शदरक, मेशक और अबेदनगो दानिय्येल और अंतिपास के साथ क्या हुआ। दूसरा जब तक हम ईमानदारी से कानून का पालन करने वाले नहीं हैं, तो हमें मनुष्यों के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने हमारे कामों को विवेक की अभिव्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि अतिरिक्त परिणाम के रूप में देखा जाएगा कि हम गड़बड़ कराने वाले लोग हैं।

पतरस ने लिखा, तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। पर यदि मसीह होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे (1 पतरस 4:15, 16)।

यह नियम है कि जब तक कोई अन्य, सरकारी या राष्ट्रीय कानून परमेश्वर की प्रकृति के निर्देशों का उल्लंघन नहीं करता, इन्हें मानते रहें। क्या यह तर्कहीन है? इसे मानें। क्या यह सुसंगत नहीं है? इसे मानें। क्या यह समाज के एक भाग से पक्षपात नहीं है? इसे मानें। जिमी एलन ने लिखा है, हमारा मुख्य ध्यान यह नहीं है कि क्या कानून बुरा है? बल्कि यह है कि कानून को मानने के लिए क्या परमेश्वर के वचन का उल्लंघन होता है (प्रेरितों 4:19)? तब तक उन्हें बुराई करने के लिए विवश नहीं किया जाता तब तक चेले उस कानून को मानेंगे जो उन पर परेशानियां लाता हैं।

**कारण:** 1. परमेश्वर ने मानवीय प्रबंध को बनाया। हमें सरकारी अधिकारियों के अधीन होना क्यों आवश्यक है। हमने पहले ही इसके पहले कारण पर जोर दिया है कि मानवीय प्रबंध की स्थापना करने वाला परमेश्वर ही है। क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है (13:1ख, 2क)। सो यदि कोई अधिकार के विरूद्ध विद्रोह करता है, तो वह परमेश्वर के ठहराये हुए के विरोध में काम कर रहा है। यानी मानवीय प्रबंध को न मानना परमेश्वर का ही सामना करना है।

सामना शब्द विरोध के साथ बन्द करना से लिया गया है। परमेश्वर ने मानवीय प्रबंध ठहराया। सरकारी अधिकारियों के बारे में हमें परमेश्वर के प्रबंध के अधीन रहना आवश्यक है। यदि हम ऐसा करने से इंकार करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर के प्रबंध के विरूद्ध है। कॉफमैन का अवलोकन है–

मसीह ने कभी दंगा नहीं करवाया, रोम के विरूद्ध यहूदियों को संगठित नहीं किया, सरकार की आलोचना नहीं की या यहूदियों के साथ नहीं मिला। बेशक यह सच है कि इतिहास के मार्ग पर उसकी पवित्र शिक्षाओं का सबसे गहरा प्रभाव था, पर यह खमीर की तरह रही न कि विस्फोट की तरह, परन्तु उसके प्रभाव ने खमीर की तरह काम किया न कि डायनामाइट की तरह।

2. दण्ड से बचने के लिए। पौलुस ने सरकारी अधिकार के अधीन होने का दूसरा कारण दण्ड से बचना बताया। और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे। (आयत 2ख)। दण्ड, न्याय के लिए सामान्य शब्द है। संभवत: निशाने के निकट है कि वे जो सामना करते हैं उन्हें स्वयं उस दण्ड के लिए जो उन्हें मिलने वाला है धन्यवाद करें। अगली आयत यह संकेत देती है कि पौलुस के दिमाग में मुख्यत: सरकारी अधिकारियों द्वारा दिया जाने वाला दण्ड था, परन्तु हम यकीन से ईश्वरीय दण्ड को निकाल नहीं सकते क्योंकि आज्ञा न मानने वाले परमेश्वर की ठहराई हुई संस्था के विरूद्ध बगावत कर रहे हैं।

आयत 3 में पौलुस ने विचार की अपनी रेखा को जारी रखा, क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण है; सो यदि तू हाकिम

से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी। फिलिप्स के अनुवाद में यदि हम इस चिंता से बचना चाहते है तो कानून का पालन करने वाला जीवन बिताना है। आमतौर पर बुरी सरकारों में भी अच्छे लोगों को पसंद किया जाता है।

पौलुस ने आगे कहा, क्योंकि वह सरकारी अधिकारी तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। (आयत 4क)। सेवक शब्द जिससे डीकनों, एवैंजलिस्टों और कलीसिया में काम करने वालों के लिए इस्तेमाल किया गया है (रोमियों 12:7; 1 तीमुथियुस 3:10, 13; 4:6)। बेशक सरकारी प्रबंध परमेश्वर का सेवक वैसे ही नहीं है जैसे वे जिनका अभी-अभी उल्लेख किया गया है। डीकनों और कलीसिया में काम करने वालों को मालूम है कि वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और यह वे सेवा मन से करते हैं। इसके विपरीत सरकारी अधिकारियों को आमतौर पर पता नहीं होता कि वे परमेश्वर के सेवक हैं और उन्होंने उस क्षमता में काम करने का कोई निर्णय नहीं लिया है। तौभी चाहे या अनचाहे, जाने या अनजाने में, परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरणा के अनुसार मानवीय प्रबंध प्रभु का सेवक अर्थात तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है।

कई विरोध हो सकते हैं, क्या पौलुस को मालूम नहीं था कि अन्यायी सरकारी अधिकारी हो सकते हैं, कितनी बार वे भलाई के लिए नहीं बल्कि बुराई के सेवकों के रूप में काम करते हैं? हम यकीन से कह सकते हैं कि पौलुस को मालूम था कि न्याय करने वाले अनुपयुक्त हो सकते हैं और अक्सर होते हैं।

- कुरिन्थुस में रोमी हाकिम गलियों द्वारा उनके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था (प्रेरितों 18; 12-16); परन्तु इससे पहले फिलिप्पी में रोमी अधिकारियों द्वारा दुर्व्यवहार किया गया था (प्रेरितों 16:19-39)।

- बाद में यरूशलेम में उसे रोमी सिपाहियों द्वारा हत्यारी यहूदी भीड़ से बचाया गया था (प्रेरितों 21:27-36)। परन्तु कैसरिया में उसने रोमी जेल में दो साल बिताए (प्रेरितों 24:27)। इसलिए कि उसने एक भ्रष्ट रोमी अधिकारी को घूस नहीं दी (प्रेरितों 24:26)।

- इसके बाद भी कैसर के सामने अपील करने पर उसे यहूदियों के हाथों मरने से उसकी रोमी नागरिकता ने बचाया (प्रेरितों 25; 9-12)। परन्तु (बाइबल से बाहर की परमपरा के अनुसार) उसके जीवन का अन्त उसके शरीर से उसके सिर को रोमी तलवार द्वारा अलग किए जाने से हुआ। (उसकी शहादत का पूर्वानुमान 2 तीमुथियुस 4:6-8 में लगाया गया था)।

अपने कुछ अनुभवों के बाद पौलुस ने यह क्यों कहा कि सरकारी अधिकारी भलाई के लिए सेवक है। क्योंकि आमतौर पर यही सच होता हैं और आमतौर पर सरकारें अच्छे व्यवहार को पुरस्कार देती और बुरे व्यवहार को दण्ड देती है। ऐसा करना उनके हक में है। किसी और आधार पर काम करने की कोशिश करने वाली सरकार अधिक देर तक नहीं रह सकती।

आयत 4 में वापस आते हुए, हम पढ़ते हैं, परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह सरकारी प्रबंध तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है;

कि उनके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दण्ड दे (आयत 4ख)। हम बदला न लें बल्कि ऐसे मामलों को परमेश्वर के हाथ छोड़ दें (12:19)। इस जीवन में बुराई को दण्ड देने का परमेश्वर का एक ढंग अदालतों के द्वारा है।

वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं शब्दों का अर्थ है, कि कानून लागू करने वालों के हाथ में तलवारें केवल दिखाने के लिए नहीं होती थी। (मेरे एक प्रोफेसर का कहना था, वे इनका इस्तेमाल अपनी ब्रेड पर मक्खन लगाने के लिए नहीं करते थे)। इसके बजाय तलवार का इस्तेमाल बुराई को रोकने के लिए किया जाता है। यह हमें इस बात का संकेत है कि सरकारी अधिकारियों के लिए जिसे खतरनाक शक्ति कहा जाता है, उसका इस्तेमाल परमेश्वर के प्रबंध में ही है। कानून मनवाने के साधनों के बिना कोई कानून अच्छी सलाह से बढ़कर नहीं है।

पौलूस का विषय बुराई को दण्ड देने के बारे में है इसलिए मैं आयत 4 को यह पुष्टि करने के रूप में समझता हूं कि परमेश्वर मृत्यु दण्ड को मान्यता देता है। तलवार हमारे पहले अध्यायों में आया था (8:35) और हमने देखा था कि खतरनाक मृत्यु और प्राणदण्ड को याद दिलाते हुए डरावना संकेत था। जेम्स डैनी ने लिखा है, बड़े जजों के द्वारा नहीं तो उनके सामने तलवार ले जाई जाती थी, जो जीवन और मृत्यु की शक्ति का प्रतीक थी जो उनके हाथ में होती थी। लुईस ने लिखा तलवार अधिकार का प्रतीक थी, परन्तु इसके साथ मृत्यु दण्ड को लागू करने की शक्ति भी थी। बाइबल की कोई बात पढ़ने पर उससे पहले पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह होना चाहिए कि इसे पहली बार पढ़ने या सुनने वालों के लिए इसका क्या अर्थ था? रोमियों 13:4 के बारे में बॉब ई. एडम्स ने निष्कर्ष निकाला कि दुष्टों को दण्ड देने का अधिकार सबसे स्वाभाविक माध्यम होगा जो पौलुस के पाठकों ने इस आयत को दिया हो।

बहुत पहले ही की बात है जब परमेश्वर ने नूह को यह विश्वव्यापी निर्देश दिया, जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा, उसका लहू मनुष्य से ही बहाया जाएगा, (उत्पत्ति 9:6क)। यह नियम मूसा की व्यवस्था का भाग बन गया (निर्गमन 21:12) और रोमियों 13 यह संकेत देता है कि यह नये नियम के साथ मेल खाता है। यह मृत्यु दण्ड के सभी सवालों को हल नहीं कर देता, जैसे यह कि मृत्यु दण्ड सबसे प्रभावी रूकावट है और/या सबसे सही दण्ड। मैं तो केवल इस बात पर जोर दे रहा हूं कि रोमियों 13:4 के अनुसार सरकार द्वारा दिया जाने वाला मृत्यु दण्ड का नियम परमेश्वर की इच्छा के विपरीत नहीं है।

यहां पर आकर और उलझने वाले सवाल खड़े होते हैं। परमेश्वर ने बुराई को दण्ड देने के लिए राज्य सरकार को बल का प्रयोग करने के लिए अधिकृत किया है, पर क्या एक मसीही उस बल का इस्तेमाल कर सकता है? अन्य शब्दों में, क्या एक मसीही राजनैतिक पद पा सकता है? क्या मसीह व्यक्ति पुलिस में या सेना में भर्ती हो सकता है? ऐसे प्रश्न के बारे में कालांतर में कई मसीही लोगों का कहना था कि नहीं। आज बहुतों (शायद अधिकतर) का उत्तर हैं, हां। उनके बारे में यह संकेत है कि हम में से अधिकतर लोग वर्तमान घटनाओं से उतना प्रभावित हुए हैं, जितना नये नियम द्वारा कही होने वाली किसी बात से या जो नये नियम में नहीं कही

गई। वर्षों से यह मुद्दा निजी विवेक पर छोड़ दिया जाता रहा है कि हर मसीह यह निर्णय ले कि उसके लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है (रोमियों 14 इस बात पर फोकस करता है कि हमें उन साथी मसीही लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जिनके विचार हमारे विचारों से अलग हैं।)

ऐसे प्रश्नों पर चर्चा करते हुए हम अनगिनत कागज भर सकते हैं, पर रोमियों 13:4 में पौलुस की बात का उनसे कोई संबंध नहीं था। पौलुस यह जोर दे रहा था कि देश के कानून का पालन करने की आवश्यकता का एक कारण यह है कि उसे न मानने पर आपको दण्ड दिया जाएगा।

3. विवेक की गवाही। यदि आप को भरोसा हो कि आप बिना पकड़े जाने के, बिना दण्ड पाने के कानून तोड़ सकते हैं तो क्या होगा? आयत 5 में पौलुस ने इस संभावना को बताया, इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है। विवेक हम सबके अन्दर दी गई परमेश्वर की वह बात है जो हमें सही और गलत में अन्तर करने में सहायता करता है। कई लोग सड़क के नियमों का केवल इसलिए पालन करते हैं क्योंकि उन्हें चालान का डर होता है; कई लोग आयकर केवल इसलिए देते हैं क्योंकि उन्हें अधिकारियों का भय होता है। पौलुस ने कहा कि हमें अधिकारियों की आज्ञा केवल इसलिए नहीं माननी चाहिए क्योंकि यह (ऐसा करना सबसे सुरक्षित है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि ऐसा करना सही है (रोमियों 13:5; फिलिप्स); क्योंकि हमसे परमेश्वर यही चाहता है कि हम करें। पौलुस की तरह हमें कोशिश करनी चाहिए कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे (प्रेरितों 24:16)।

---

# विश्वास

## जोएल स्टीफ़न विलियम्स

क्योंकि मनुष्य का उद्धार "विश्वास के द्वारा" होता है (इफिसियों 2:8; रोमियों 1:16), इसलिये यह समझना आवश्यक है कि इसका वास्तव में अर्थ क्या है। यीशु ने कहा था, "यदि तुम विश्वास नहीं करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24; प्रेरितों 15:9)। हमें विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर है। (इब्रानियों 11:6)। हमें यह भी विश्वास करना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (1 यूहन्ना 5:1; रोमियों 10:9-10) यीशु ने ही प्रतिज्ञा करके कहा था, कि यदि हम उसमें विश्वास लाएंगे तो नाश नहीं होंगे, परन्तु अनन्त जीवन पाएंगे। (यूहन्ना 3:16, 18, 36; 6:35; 11:26; 20:30-31; प्रेरितों 10:43; 16:31)। लिखा है, कि मनुष्य विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरेगा (रोमियों 3:24, 28; 5:1; गलतियों 2:16; 3:24)। सो जबकि विश्वास उद्धार पाने के लिए इतना महत्वपूर्ण है, तो इसका तात्पर्य क्या है?

विश्वास या ईमान का आरम्भ ज्ञान से होता है। अर्थात् जब मनुष्य कुछ देखता या सुनता है तो उसके मन में विश्वास उत्पन्न होता है। पौलुस ने कहा था :

फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय में सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? .... ....सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:14-17)।

इसलिए जब कोई व्यक्ति सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में सुनता है तब उसके भीतर विश्वास पैदा होता है। परन्तु जिस विश्वास के द्वारा मनुष्य को उद्धार मिलता है, वोह केवल मन का विश्वास नहीं है। मन में विश्वास का आना विश्वास का आरम्भ मात्र है। उदाहरण के रूप से, मैं किसी डॉक्टर के पास जाऊं और मेरा पूरा विश्वास हो कि वोह एक अच्छा डॉक्टर है, और मेरा यह भी विश्वास हो कि जो दवाई वोह डॉक्टर मुझे देगा उसके सेवन से मुझे फ़ायदा होगा। पर उस दवाई का सेवन मैं वास्तव में उस प्रकार से न करूं जैसे कि डॉक्टर ने बताया था। तो निश्चित रूप से मुझे कोई लाभ नहीं होगा। ऐसे ही विश्वास भी है, यदि केवल मन में बसनेवाला विश्वास है, पर जो परमेश्वर कहता है उसे नहीं करता, तो ऐसा विश्वास व्यर्थ है। इसी प्रकार के विश्वास को सम्बोधित करके याकूब ने कहा था, "दुष्टात्मा भी विश्वास करते और थरथराते हैं। (याकूब 2:19)। दुष्टात्माएं विश्वास करती हैं, कि परमेश्वर है। उन्हें परमेश्वर से भय भी लगता है। पर वे परमेश्वर की बात नहीं मानतीं।

जिस विश्वास के द्वारा मनुष्य को उद्धार प्राप्त होता है, उसमें एक भरोसा होता है। उद्धार उस विश्वास से होता है जो आज्ञा मानता है। बाइबल में हम अनेक ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने परमेश्वर में अपने विश्वास को उसकी आज्ञाओं पर चलकर दिखाया था (इब्रानियों 11:1-38)। यदि हमारा विश्वास केवल मन में बसनेवाला ही विश्वास है, तो ऐसा विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है। (याकूब 2:14-26) उद्धार दिलानेवाला विश्वास ज़िन्दा विश्वास है, जो कुछ करके दिखाता है। (गलतियों 5:6)। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह सिखाते हैं कि एक मसीही बनने के लिये यदि कोई यह कह दे कि मैं मसीह में विश्वास करता हूं तो ऐसा कह देने भर से वोह व्यक्ति एक मसीही बन जाता है। कुछ कहते हैं कि एक काग़ज पर यह लिखने से कि मैं मसीह में विश्वास करता हूँ, कोई मसीह बन जाता है। परन्तु मन का विश्वास जब तक प्रभु की आज्ञा मानकर विश्वास को व्यक्त न करे, ऐसा विश्वास अप्रर्याप्त है। यूहन्ना कहता है, "जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है, परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वोह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36)।

---

# ''क्या तू सचमुच चंगा होना चाहता है''

यूहन्ना 5 अध्याय में यीशु ने एक अजीब प्रश्न पूछा था। यीशु ने एक बीमार आदमी से पूछा था, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' (आयत 6)। आयत 5 से पता चलता है कि वह आदमी पिछले अड़तीस वर्ष से बीमार था। इसी कारण से यीशु ने उससे

पूछा था कि क्या तू सचमुच चंगा होना चाहता है?

पहली नजर में तो यह प्रश्न बिल्कुल वैसे ही बेतुका सा लगता है, जैसे कई बार एक्सिडेंट हो जाने के बाद पूछा जाता है। एक आदमी बिल्कुल पिचकी हुई एक कार के पास जाता है। कार में एक आदमी है, जिसकी हालत बहुत नाजुक है। उसके सिर पर लगी चोटों में से खून बह रहा है, उसकी हड्डियां टूट कर कपड़ों में से बाहर आ गई हैं। वह आदमी उससे पूछता है, ''तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी?'' एक स्त्री अस्पताल की ओर भागती जा रही है। उसके एक साथी के सिर से पैरों तक पट्टियां बांधी हुई हैं। इसी कारण उसकी शक्ल बिगड़ गई है; उसके शरीर में बहुत सारी नलियां लगी हुई हैं। और वह अपने घायल साथी से पूछती है, ''तकलीफ ज्यादा तो नहीं है?''

इस उदाहरण को निजी बनाने के लिए, मान लें कि आपकी तबीयत बड़ी खराब है और कोई आ कर आपसे पूछता है, ''तुम चंगा होना चाहते हो?'' या मान लें कि कोई किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेता है जिसके साथ आपकी नाराजगी थी, पूछता है, ''तुम उसके साथ सुलह करना चाहते हो?'' या मान लें कि आपकी पत्नी के साथ या परिवार में कोई गड़बड़ है और कोई आप से पूछता है, ''क्या आप अपनी पत्नी के साथ या परिवार के साथ सुलह करना चाहते हैं?'' या आप किसी अपराध के बोझ तले दबे हैं और कोई आप से पूछता है, ''आप इससे छुटकारा पाना चाहते हैं?''

आपकी पहली प्रतिक्रिया शायद यही होगी, ''कितना अजीब प्रश्न है। भला इसमें कौन सी पूछने वाली बात है कि मैं चंगा होना चाहता हूं (या लोगों के साथ या अपनी पत्नी के साथ या अपने परिवार के साथ मधुर संबंध चाहता हूं या पाप से छुटकारा चाहता हूं)? यह पूछना ही बेतुका सा लगता है। हम सब यही चाहते हैं।

यूहन्ना 5:1-16 का अध्ययन करते हुए इन प्रश्नों को ध्यान में रखें।

यीशु ने गलील में अपनी सेवकाई आरंभ कर दी थी। इस सेवकाई की एक विशेष बात बीमारों की चंगाई थी। लोगों को वचन बताते हुए यीशु उन्हें चंगा भी करता था, जिससे दो बातें हुई-

(1) भीड़ इक्ट्ठी होने लगी और (2) विरोध बढ़ने लगा था। इस पाठ में हम चंगाई की एक घटना तथा उससे उठने वाले विरोध का अध्ययन करेंगे। इस कहानी को पढ़ते हुए हम यीशु द्वारा पूछे गए अजीब प्रश्न, क्या तू चंगा होना चाहता है? पर विचार करेंगे।

यीशु ने तालाब के किनारे एक आदमी को चंगा किया था। पहले बैतसेदा के तालाब के पास आदमी को चंगाई मिलती हुई देखते हैं। मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि असल में यह तिहरी चंगाई थी।

## देह की चंगाई

अध्याय 5 आरंभ होता है, इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया (आयत 1)। क्योंकि ''पर्व'' के बजाय यह ''एक पर्व'' था, जिसका अर्थ यहूदियों के छोटे त्योहारों में से कोई हो सकता है, जिसमें भाग लेना

यहूदी पुरुषों के लिए अनिवार्य नहीं था। आज के कुछ लोगों के विपरीत जो आराधना में अनिवार्य होने पर ही जाते हैं, यीशु को आराधना में जाना अच्छा लगता था।

यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बैतसेदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे है (आयत 2) मूल धर्मशास्त्र में भेड़ों की वस्तु के पास है। भेड़ो की वस्तु संभवतया भेड़ों का फाटक था, जिसमें से बलि की जाने वाली भेड़ों को ले जाया जाता था।

जिस तालाब का उल्लेख यहां है, वह आज भी है। बैतसदा का अर्थ करूणा का स्थान है। पांच ओसारे तालाब के किनारे काफी चौड़ी जगह थी।

अगला दृश्य कंपकंपी लगा देने वाला है उन (ओसारों) में बहुत से बीमार, अंधे लंगड़े और सूखे अंग वाले पड़े रहते थे'' (आयत 3)। वहां से आती दुर्गंध सिर चकरा देने वाली होती थी और दृश्य बहुत ही परेशान करने वाला होगा। अलग-अलग तरह के बीमार उनका चिल्लाना वहां की दुर्गंध कमजोर दिल का आदमी तो वहां ठहर भी नहीं सकता होगा।

रोगी पानी के हिलने की आशा में पड़े रहते थे क्योंकि तय समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता था वह चंगा हो जाता था चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो (आयतों 3क, 4)।

स्पष्ट रूप से यह व्याख्या मूल धर्म शास्त्र में नहीं थी, परन्तु एक प्राचीन शास्त्री की व्यवस्था में थी, जिसे बाइबल में लिख दिया गया। इन शब्दों में एक पुराने अंधविश्वास का पता चलता है, जिस कारण लोग इस जगह पर आते थे (देखें ओयत 7)। इस तालाब के बारे में जो बैतसेदा के नाम से प्रसिद्ध था, कहा जाता है कि इसके तल के नीचे पानी के सोते हैं। समय-समय पर पानी के बुलबुले ऊपर उठते होंगे। स्पष्टता लोग पानी के इस प्रकार हिलने को स्वर्गदूतों द्वारा हिलाया जाना मानते थे।

और वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था (आयत 5)। यह कहना गलत नहीं होगा कि पूरा जीवन नहीं तो अपने आधे जीवन का अधिकतर समय वह व्यक्ति बीमार ही रहा था। जैसा कि हम आयत 7 में देखेंगे कि वह शारीरिक रूप से असमर्थ था और स्वयं पानी में नहीं उतर सकता था। शायद कमजोर, अपंग या लकवे से ग्रस्त था।

आयत 6 यही पृष्ठभूमि बताती है- यीशु ने उसे पड़े हुए देखकर और जानकर कि वह बहुत लोगों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा क्या तू चंगा होना चाहता है? यीशु इस कुण्ड पर जहां बहुत सारे बीमार लोग पड़े रहते थे, किसी विशेष उद्देश्य से आया था। यह स्पष्ट है कि वह नगर के दार्शनिक स्थलों को देखने नहीं आया था। बेशक लोगों के प्रति करूणा ने उसे यहां आने के लिए प्रेरित किया था।

कुण्ड पर पहुंच कर यीशु ने अड़तीस वर्ष से वहां बीमार पड़े आदमी को देखा। यीशु ने इस मनुष्य को चंगा करने का निर्णय क्यों लिया? स्पष्टता वहां इतने बीमार पड़े लोगों में से यीशु ने इसे ही चंगा किया।

क्या उसे केवल इसलिए चंगा किया गया कि हर कोई देख कर कह सके कि वह सचमुच चंगा हुआ है? या इसलिए कि वह बिल्कुल निराश था और यीशु निराश

लोगों की आशा बेसहारों का सहारा था? या इसलिए कि उसका कोई साथी नहीं था (आयत 7) और यीशु मित्रहीन लोगों का मित्र था? (यीशु शायद उस बालक की तरह है, जिसे पिल्लों के झुण्ड में से एक पिल्ला उठाने के लिए कहा गया तो उसने वह सबसे छोटा पिल्ला उठाया, जिसे बड़े और शक्तिशाली पिल्ले इधर-उधर धकेल रहे थे)।

जो भी कारण हो, यीशु ने इस जानकर कि वह बहुत लम्बे समय से बीमार है (पूरे अड़तीस साल से) उसकी ओर दृष्टि और पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?''

आइए जरा रूककर इस प्रश्न पर विचार करें। यीशु ने यह अजीब प्रश्न क्यों पूछा? अड़तीस वर्ष बीमार रहना परेशानी की बात तो है, परन्तु दूसरी ओर उसे काफी आसानी भी थी। कोई उसे हर रोज इस कुण्ड के किनारे छोड़ देता होगा। दिन भर वह बिना किसी जिम्मेदारी के वहां पड़ा रहता होगा। उसने भीख मांग कर कुछ पैसे भी जमा किए होंगे। उसके लिए निर्णय कोई और लेता था जबकि काम कोई और करता था। शायद उसने हालातों से समझौता कर लिया था और अब इसी तरह जीने का मन बना लिया था।

दूसरी ओर, यदि वह अचानक चंगा हो जाता तो क्या होना था? उसे निर्वाह के लिए काम करना पड़ता? अड़तीस साल तक कुछ न करने के कारण अर्थात बिना कोई काम सीखे नौकरी ढूंढ़ने में उसे कितनी परेशानी होती। उसे जिम्मेदारी और जवाबदेही भी झेलनी पड़ती। उसे काम-धंधा करना पड़ता, प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती तथा स्वयं निर्णय लेना पड़ता। इसके साथ उसे असफल होने की संभावना भी सहनी थी।

यीशु उससे पूछ रहा था कि क्या तू सचमुच में चाहता है कि चंगा हो जाए? चंगा होने को तैयार है?'' बीमार होना कई लोगों को रास आ जाता है। आपने एक पुरानी कहावत सुनी होगी फलां व्यक्ति को तो बीमारी रास आ गई है। कईयों को तो बीमार पड़ना अच्छा लगता है। कइयों को तो काम न करने का बहाना मिल जाता है। कई अपनी बीमारी का इस्तेमाल दूसरों को उंगलियों पर नचाने और घुमाने के लिए करते हैं।

अब आपको यीशु का यह प्रश्न इतना अजीब नहीं लगेगा?

---

# मसीही होने की आशिषें

## केथ हिंडस

मसीही जीवन एक उत्तम जीवन है। हमें बहुत सी आशिषें मिली हैं और उन आशिषों के कारण हमें प्रभु में सदा आनन्दित रहना चाहिए। इफिसियों 1:3 कहता है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशिष दी है। परमेश्वर ये आशिषें उन्हें देता है, जो मसीह में है। मसीह में होने का अर्थ उसकी देह में होना है जो कि उसकी

कलीसिया है (इफिसियों 1:23)। वे सब, जो मसीह की कलीसिया में हैं, कुछ आशिषों पर ध्यान दें।

**1. पापों की क्षमा:** इफिसियों 1:7 बताता है कि मसीह में हम को... उसके लोहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। पाप और दोष से स्वतंत्रता का आनंद केवल मसीही व्यक्ति ले सकता है। हमारे पाप बपतिस्मा लेने के समय धो दिए गए थे (प्रेरितों 22:16), जब हमें मसीह और उसकी कलीसिया में मिलाया गया था (गलातियों 3:27; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

**2. परमेश्वर और मसीह के साथ संगति:** कलीसिया में मिलाए जाने पर हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है और हम परमेश्वर की संगति अर्थात साथ का आनन्द लेने लगते हैं (इफिसियों 2:16)। हमें यह अधिकार मिल जाता है कि हम प्रभु-भोज के समय मसीह के साथ उसकी मेज पर उससे भेंट करें। 1 कुरिन्थियों 10:16 प्रश्न के रूप में हमारे ध्यान में लाता है, वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? प्रार्थना में ही हम परमेश्वर की संगति का आनन्द लेते हैं। इब्रानियों 4:16 कहता है इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

**3. परमेश्वर के परिवार के साथ संगति:** कलीसिया में हमें मसीह में भाईयों और बहनों की संगति मिलती है। गलातियों 6:10 में हमें सब के साथ विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ भलाई करने को कहा गया है। एक दूसरे की संगति प्रेम, दया, सहायता, प्रार्थना और प्रोत्साहन से हम बहुत कुछ कर सकते है। इब्रानियों 10:24 कहता है, और प्रेम और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिंता किया करें।

**4. परमेश्वर की ओर से आवश्यकता के समय संभाल:** मसीह ने वचन दिया है कि परमेश्वर हमें सम्भालता है यदि हम पहले उसके राज्य और उसके धर्म को ढूंढ़े (मत्ती 6:3)। हमें यह भी वायदा है कि उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8 :28)। यह तो सचमुच में बहुत बड़ी आशीष है कि परमेश्वर हमारा ध्यान रखता हैं

**5. स्वर्ग की आशा:** सबसे बड़ी आशीष जो हमें मिली है वह, अनन्त जीवन की आशा (है), जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है (तीतुस 1:2)। एक दिन हम स्वर्ग की उस सुन्दरता का आनन्द लेंगे जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य 21 और 22 अध्याय में किया गया है। मसीह में हमें आशिषें बहुत सी मिली है। एक-एक करके उन्हें गिनें। प्रत्येक आशीष का नाम लेकर।